(कैलाश गौतम सृजन संस्थान, प्रयागराज द्वारा आयोजित जनकवि यशभारती कैलाश गौतम स्मृति उत्सव में दिनांक 27 दिसम्बर, 2019 को उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, प्रेक्षागृह प्रयागराज में मा0 न्यायमूर्ति पंकज मित्थल जी का उद्बोधन)

कविता के किसान

सम्मानित मंच,

परम् श्रद्धेय न्यायमूर्ति श्री गिरधर मालवीय जी,

मेरे बड़े भाई न्यायमूर्ति श्री अरूण टंडन जी,

उपस्थित विशिष्ट कविजन, एवं

सुधि श्रोताजन।

जहाँ न पहुँचे रवि

वहाँ पहुँचे कवि

हमारे जनकवि कैलाश गौतम जी अपने ह्रदय की गहराइयों से अपनी रचनाएं लिखते व सुनाते थे जो जनमानस के दिलों के अन्दर घर कर लेती थीं। वह अपनी रचनाओं से उपरोक्त पंक्तियों को पूरी तरह सार्थक सिद्ध करते थे।

मेरा उनसे परिचय न्यायमूर्ति प्रेम शंकर गुप्त जी के घर पर हुआ था। वह बड़े ही सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। शहर में रहकर भी वह हमेशा गाँव से जुड़े रहे और उसी परिवेश पर लिखते रहे। वह दिये की तरह जले पर उनकी रचनाओं में सूर्य सा तेज था।

कैलाश जी अपनी किस्म के एकदम अनोखे कवि थे। उनकी कविताओं में पूरब की भाषा की झलक भरपूर मात्रा में मिलती है। उनकी कविताओं में गाँव और देश की मिट्टी की भीनी– भीनी खुशबु आती है। ग्रामीण जीवन शैली की उठापटक को उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से बखूबी दिखाया। वह जैसा जीवन जीते थे वैसा ही बयाँ भी करते थे। उनका कविता कहने का अंदाज गुदगुदी पैदा करता था, सुख देता था, दुख का वहाँ नामोनिशान न था।

उनकी कविताओं में रस, संवेदना, मनोरंजन और लोकजीवन की उपस्थिति मिलती है।

उनका हँसता हुआ चेहरा देख उनकी दो पंक्ति मुझे बरबस ही याद आ जाती हैं। **"हम भी कितने सस्ते हैं जब देखो हँसते हैं।"**

मुझे आज बड़ा सुखद अनुभव हुआ जब यश मालवीय जी ने अपने सम्बोधन में कैलाश गौतम जी को, "कविता के कैलाश" से हट कर "कविता के किसान" कहकर सम्बोधित किया। वह वास्तव में प्रयागराज में अपनी उपस्थिति से कविता के बीच बोकर गये और वही आज फल–फूल रहे हैं और उसी कारण आज हम यहाँ श्लेश जी के आग्रह पर उपस्थित हुए हैं।

नया वर्ष आ रहा है उसको ध्यान में रखते हुए कैलाश जी को दो पंक्तियों से अपनी बात समाप्त करता हूँ।

नये साल में रामजी, इतनी सी फरियाद
बना रहे आदमी, बना रहे संवाद
नये साल में रामजी, न हो भारत बन्द
हर दम छाया रहे, पब्लिक में आनंद।

जय नव भारत